

प्रभावी शिक्षण के लिए कक्षा प्रबंधन और भावनात्मक बुद्धिमत्ता का योगदान

प्रशांत¹ and डॉ. हरिश्चंद्र सिंह²

शोधार्थी, शिक्षा विभाग¹

शोध पर्यवेक्षक, शिक्षा विभाग²

श्री जगदीशप्रसाद झाबरमल टिबरेवाला विश्वविद्यालय, झुंझुनू, राजस्थान

सार

"प्रभावी शिक्षण और कक्षा प्रबंधन में भावनात्मक बुद्धिमत्ता की भूमिका" का सार शिक्षा के क्षेत्र में भावनात्मक बुद्धिमत्ता (ईआई) के महत्व को रेखांकित करता है। यह पेपर शिक्षण प्रथाओं की प्रभावकारिता और कक्षा की गतिशीलता के प्रबंधन पर ईआई के बहुमुखी प्रभाव पर प्रकाश डालता है। साहित्य और अनुभवजन्य साक्ष्य की व्यापक समीक्षा के माध्यम से, यह स्पष्ट करता है कि शिक्षकों की भावनाओं को पहचानने, समझने और विनियमित करने की क्षमता न केवल उनके निर्देशात्मक तरीकों को प्रभावित करती है, बल्कि छात्र की सहभागिता, व्यवहार और शैक्षणिक परिणामों को भी आकार देती है। सार सकारात्मक शिक्षक-छात्र संबंधों को बढ़ावा देने, अनुकूल सीखने के माहौल को बढ़ावा देने और विघटनकारी व्यवहार को कम करने में ईआई की महत्वपूर्ण भूमिका पर प्रकाश डालता है। इसके अलावा, यह शिक्षकों की ईआई दक्षताओं को बढ़ाने और परिणामस्वरूप समग्र शिक्षण प्रभावशीलता और कक्षा प्रबंधन में सुधार लाने के उद्देश्य से विभिन्न रणनीतियों और हस्तक्षेपों की खोज करता है। सैद्धांतिक रूपरेखाओं और व्यावहारिक अंतर्दृष्टि को संश्लेषित करके, यह पेपर शैक्षिक सेटिंग्स में भावनात्मक बुद्धिमत्ता के महत्व पर बढ़ती चर्चा में योगदान देता है और शिक्षक प्रशिक्षण कार्यक्रमों और व्यावसायिक विकास पहलों के लिए मूल्यवान निहितार्थ प्रदान करता है।

खोजशब्द: भावनात्मक बुद्धिमत्ता, शिक्षण तकनीक

परिचय

प्रभावी शिक्षण और कक्षा प्रबंधन में भावनात्मक बुद्धिमत्ता (ईआई) की भूमिका को अनुकूल सीखने के माहौल को बढ़ावा देने और छात्र विकास को बढ़ावा देने में महत्वपूर्ण माना जा रहा है। जैसे-जैसे शिक्षक

आज की कक्षाओं की जटिलताओं को समझते हैं, ईआई एक महत्वपूर्ण कौशल सेट के रूप में उभरता है जो अकादमिक दक्षता से परे जाता है। इस परिचय का उद्देश्य यह पता लगाना है कि शिक्षकों की अपनी भावनाओं को समझने और प्रबंधित करने के साथ-साथ अपने छात्रों के साथ सहानुभूति रखने और उन्हें प्रभावित करने की क्षमता शिक्षण प्रभावशीलता और कक्षा की गतिशीलता को कैसे महत्वपूर्ण रूप से प्रभावित करती है। भावनात्मक बुद्धिमत्ता में आत्म-जागरूकता, आत्म-नियमन, सामाजिक जागरूकता और संबंध प्रबंधन शामिल हैं, जो सभी सहायक और समावेशी शिक्षण वातावरण बनाने में योगदान करते हैं। छात्रों की भावनात्मक जरूरतों को स्वीकार करके, शिक्षक उनके निर्देशात्मक दृष्टिकोण को अनुकूलित कर सकते हैं, उचित सहायता प्रदान कर सकते हैं और व्यवहार संबंधी चुनौतियों का अधिक प्रभावी ढंग से समाधान कर सकते हैं। इसके अलावा, छात्रों में भावनात्मक बुद्धिमत्ता विकसित करने से लचीलापन, सहानुभूति और सकारात्मक सामाजिक संपर्क, शैक्षणिक सफलता और व्यक्तिगत विकास के लिए आवश्यक गुण विकसित होते हैं। इस संदर्भ में, यह पेपर शिक्षा में भावनात्मक बुद्धिमत्ता के बहुमुखी आयामों पर प्रकाश डालता है, शिक्षण प्रथाओं, छात्र जुड़ाव और समग्र कक्षा प्रबंधन प्रभावशीलता के लिए इसके निहितार्थ की खोज करता है।

औचित्य

भावनात्मक बुद्धिमत्ता (ईआई) शिक्षा सहित जीवन के विभिन्न क्षेत्रों में एक महत्वपूर्ण कारक के रूप में उभरी है। भावनाओं को समझने और प्रबंधित करने की क्षमता प्रभावी शिक्षण को सुविधाजनक बनाने और सकारात्मक कक्षा वातावरण को बढ़ावा देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। इसलिए, इस शोध पत्र का उद्देश्य प्रभावी शिक्षण और कक्षा प्रबंधन में भावनात्मक बुद्धिमत्ता की भूमिका का पता लगाना और उसका विश्लेषण करना है।

1. एक महत्वपूर्ण शैक्षिक मुद्दे को संबोधित करना: कक्षा प्रबंधन प्रभावी शिक्षण का एक प्रमुख पहलू है, और यह छात्रों के सीखने के परिणामों को बहुत प्रभावित करता है। जिन शिक्षकों के पास उच्च भावनात्मक बुद्धिमत्ता होती है, वे कक्षा की गतिशीलता, छात्र व्यवहार और पारस्परिक संबंधों की जटिलताओं को संभालने के लिए बेहतर ढंग से सुसज्जित होते हैं। शिक्षण प्रभावशीलता और कक्षा प्रबंधन पर भावनात्मक बुद्धिमत्ता के प्रभाव की जांच करके, यह अध्ययन शिक्षा में एक महत्वपूर्ण मुद्दे को संबोधित करता है।

2. शिक्षक-छात्र संबंधों को बढ़ाना: प्रभावी शिक्षण और सीखना शिक्षक-छात्र संबंधों की गुणवत्ता पर निर्भर करता है। उच्च भावनात्मक बुद्धिमत्ता वाले शिक्षक छात्रों की भावनाओं को समझ सकते हैं और उन पर प्रतिक्रिया दे सकते हैं, सकारात्मक संबंध और तालमेल को बढ़ावा दे सकते हैं। इस अध्ययन के माध्यम से, हम यह जानकारी प्राप्त कर सकते हैं कि भावनात्मक बुद्धिमत्ता मजबूत शिक्षक-छात्र संबंधों के निर्माण में

कैसे योगदान देती है, जो बदले में, छात्र की व्यस्तता, प्रेरणा और शैक्षणिक उपलब्धि पर सकारात्मक प्रभाव डालती है।

3. एक सकारात्मक कक्षा वातावरण को बढ़ावा देना: एक इष्टतम शिक्षण वातावरण बनाने के लिए एक सकारात्मक कक्षा वातावरण आवश्यक है। भावनात्मक बुद्धिमत्ता शिक्षकों को एक सहायक माहौल बनाने में सक्षम बनाती है जहाँ छात्र सुरक्षित, सम्मानित और मूल्यवान महसूस करते हैं। कक्षा प्रबंधन में भावनात्मक बुद्धिमत्ता की भूमिका की जांच करके, यह अध्ययन प्रभावी रणनीतियों पर प्रकाश डाल सकता है जो सकारात्मक बातचीत, संघर्ष समाधान और छात्रों के समग्र कल्याण को बढ़ावा देते हैं।

4. शिक्षक व्यावसायिक विकास को बढ़ाना: शिक्षण प्रथाओं में निरंतर सुधार के लिए शिक्षक व्यावसायिक विकास महत्वपूर्ण है। प्रभावी शिक्षण में भावनात्मक बुद्धिमत्ता के महत्व को पहचानने से शिक्षक प्रशिक्षण कार्यक्रमों और पहलों का मार्गदर्शन किया जा सकता है। यह अध्ययन साक्ष्य-आधारित रणनीतियों के विकास में योगदान दे सकता है जो शिक्षकों के बीच भावनात्मक बुद्धिमत्ता दक्षताओं को बढ़ाता है, जिससे शिक्षण प्रथाओं और छात्र परिणामों में सुधार होता है।

5. शैक्षिक नीति और अभ्यास को सूचित करना: इस शोध के निष्कर्ष विभिन्न स्तरों पर शैक्षिक नीतियों और प्रथाओं को सूचित कर सकते हैं। शैक्षिक नीति निर्माता साक्ष्य का उपयोग दिशानिर्देश और मानक विकसित करने के लिए कर सकते हैं जो शिक्षक शिक्षा कार्यक्रमों में भावनात्मक बुद्धिमत्ता को शामिल करने पर जोर देते हैं। स्कूल प्रशासक और शैक्षणिक संस्थान भावनात्मक रूप से बुद्धिमान शिक्षकों के चयन और समर्थन को सुनिश्चित करने के लिए इन निष्कर्षों को अपनी भर्ती, प्रशिक्षण और मूल्यांकन प्रक्रियाओं में शामिल कर सकते हैं।

अध्ययन का उद्देश्य

1. शिक्षण और कक्षा प्रबंधन के संदर्भ में भावनात्मक बुद्धिमत्ता की अवधारणा और इसकी प्रासंगिकता का पता लगाना।
2. भावनात्मक बुद्धिमत्ता और प्रभावी शिक्षण प्रथाओं के बीच संबंधों की जांच करना।
3. कक्षा प्रबंधन रणनीतियों और छात्र व्यवहार पर भावनात्मक बुद्धिमत्ता के प्रभाव की जांच करना।
4. विशिष्ट भावनात्मक बुद्धिमत्ता दक्षताओं की पहचान करना जो सकारात्मक और उत्पादक कक्षा वातावरण को बढ़ावा देने में शिक्षकों के लिए सबसे अधिक फायदेमंद हैं।
5. शिक्षक-छात्र संबंधों और छात्र जुड़ाव पर भावनात्मक बुद्धिमत्ता के प्रभाव का आकलन करना।

साहित्य की समीक्षा

भावनात्मक बुद्धिमत्ता और शिक्षण प्रभावशीलता: अनुसंधान अध्ययनों ने लगातार भावनात्मक बुद्धिमत्ता और शिक्षण प्रभावशीलता के बीच एक सकारात्मक संबंध प्रदर्शित किया है। ब्रैकेट एंड रिर्वर्स (2019) के

अनुसार, उच्च भावनात्मक बुद्धिमत्ता वाले शिक्षक अपनी भावनाओं को प्रबंधित करने और छात्रों के साथ सकारात्मक संबंध विकसित करने के लिए बेहतर ढंग से सुसज्जित हैं। ये शिक्षक उच्च स्तर की सहानुभूति, अनुकूलनशीलता और संचार कौशल का प्रदर्शन करते हैं, जो छात्र प्रेरणा, व्यवहार और शैक्षणिक उपलब्धि में सुधार करने में योगदान करते हैं (मिकोलाज़क एट अल, 2019)।

कक्षा प्रबंधन और भावनात्मक बुद्धिमत्ता: इष्टतम शिक्षण वातावरण बनाने के लिए प्रभावी कक्षा प्रबंधन महत्वपूर्ण है। भावनात्मक बुद्धिमत्ता सकारात्मक कक्षा प्रबंधन रणनीतियों को बढ़ावा देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। उच्च भावनात्मक बुद्धिमत्ता वाले शिक्षक अधिक आत्म-जागरूकता प्रदर्शित करते हैं, जिससे वे तनावपूर्ण स्थितियों में अपनी भावनाओं को पहचानने और प्रबंधित करने में सक्षम होते हैं (डेविस और हम्फ्री, 2021)। यह स्व-नियमन शिक्षकों को छात्रों के दुर्व्यवहार का शांतिपूर्वक और रचनात्मक तरीके से जवाब देने, सकारात्मक अनुशासन को बढ़ावा देने और कक्षा में विघटनकारी व्यवहार को कम करने की अनुमति देता है (जोन्स एट अल, 2020)।

शिक्षक-छात्र संबंध और भावनात्मक बुद्धिमत्ता: भावनात्मक बुद्धिमत्ता शिक्षक-छात्र संबंधों की गुणवत्ता से निकटता से जुड़ी हुई है, जो छात्रों की सहभागिता और सीखने के परिणामों पर महत्वपूर्ण प्रभाव डालती है। उच्च भावनात्मक बुद्धिमत्ता वाले शिक्षक अपने छात्रों के साथ भरोसेमंद और सहायक संबंध स्थापित करने की क्षमता रखते हैं (मौरर और ब्रैकेट, 2021)। ये शिक्षक छात्रों की जरूरतों के प्रति संवेदनशीलता प्रदर्शित करते हैं, भावनात्मक समर्थन प्रदान करते हैं, और व्यक्तिगत मतभेदों को प्रभावी ढंग से संबोधित करते हैं, जिससे छात्रों की प्रेरणा बढ़ती है और सीखने की प्रक्रिया में सक्रिय भागीदारी होती है (सटन एट अल, 2022)।

शिक्षक प्रशिक्षण के लिए निहितार्थ: शिक्षण प्रभावशीलता और कक्षा प्रबंधन पर भावनात्मक बुद्धिमत्ता के पर्याप्त प्रभाव को देखते हुए, शिक्षक तैयारी कार्यक्रमों में भावनात्मक बुद्धिमत्ता प्रशिक्षण को एकीकृत करना आवश्यक है। शिक्षकों को भावनात्मक बुद्धिमत्ता दक्षताओं को विकसित करने के अवसर प्रदान करने से उनकी आत्म-जागरूकता, सहानुभूति और संबंध-निर्माण कौशल में वृद्धि हो सकती है, जिससे वे सकारात्मक और समावेशी शिक्षण वातावरण बनाने में सक्षम हो सकते हैं (ऑगस्टिन और बरचर्ड, 2023)। यह प्रशिक्षण शिक्षकों को उनकी भावनाओं को पहचानने और नियंत्रित करने की रणनीतियों से लैस कर सकता है, जिससे तनावपूर्ण स्थितियों को संभालने और छात्रों की भावनात्मक भलाई का समर्थन करने की उनकी क्षमता में सुधार होगा (अशकानासी एट अल, 2020)।

भावनात्मक बुद्धिमत्ता और शिक्षक कल्याण: भावनात्मक बुद्धिमत्ता न केवल छात्रों को लाभ पहुँचाती है बल्कि शिक्षक कल्याण और नौकरी से संतुष्टि में भी योगदान देती है। उच्च भावनात्मक बुद्धिमत्ता वाले शिक्षक कम स्तर के तनाव, जलन और भावनात्मक थकावट का अनुभव करते हैं (एलन एट अल., 2021)। अपनी भावनाओं और तनाव के स्तर को प्रभावी ढंग से प्रबंधित करके, शिक्षक सकारात्मक मानसिकता

बनाए रख सकते हैं, चुनौतियों को अधिक प्रभावी ढंग से संभाल सकते हैं और अपने समग्र कार्य प्रदर्शन और संतुष्टि को बढ़ा सकते हैं।

छात्र सामाजिक और भावनात्मक शिक्षण (एसईएल) पर प्रभाव: भावनात्मक बुद्धिमत्ता छात्रों के सामाजिक और भावनात्मक शिक्षण (एसईएल) कौशल को बढ़ावा देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। उच्च भावनात्मक बुद्धिमत्ता वाले शिक्षक आत्म-जागरूकता, आत्म-नियमन, सामाजिक जागरूकता, संबंध कौशल और जिम्मेदार निर्णय लेने (ब्रैकेट एट अल., 2022) जैसी महत्वपूर्ण एसईएल दक्षताओं को प्रभावी ढंग से मॉडल और सिखा सकते हैं। भावनात्मक बुद्धिमत्ता को अपनी शिक्षण प्रथाओं में एकीकृत करके, शिक्षक छात्रों की भावनात्मक साक्षरता, सहानुभूति और पारस्परिक कौशल को बढ़ा सकते हैं, जिससे सामाजिक संबंधों में सुधार और समग्र कल्याण हो सकता है।

सांस्कृतिक और प्रासंगिक विचार: शिक्षण और कक्षा प्रबंधन में भावनात्मक बुद्धिमत्ता की भूमिका पर सांस्कृतिक और प्रासंगिक कारकों के प्रभाव को पहचानना महत्वपूर्ण है। विभिन्न सांस्कृतिक पृष्ठभूमि और शैक्षिक सेटिंग भावनाओं की अभिव्यक्ति और व्याख्या को आकार दे सकती हैं। शिक्षकों को इन सांस्कृतिक बारीकियों के प्रति संवेदनशील होने और अपने भावनात्मक बुद्धिमत्ता कौशल को तदनुसार अनुकूलित करने की आवश्यकता है (अहमद एट अल., 2023)। इसके अतिरिक्त, विविध कक्षाओं की विशिष्ट चुनौतियाँ और माँगें, जैसे उच्च-गरीबी वाले स्कूल या विभिन्न सांस्कृतिक पृष्ठभूमि के छात्रों वाली कक्षाएँ, शिक्षकों को इन संदर्भों की अद्वितीय आवश्यकताओं और गतिशीलता को प्रभावी ढंग से प्रबंधित करने के लिए विशिष्ट भावनात्मक बुद्धिमत्ता रणनीतियों को नियोजित करने की आवश्यकता हो सकती है।

व्यावसायिक विकास और भावनात्मक बुद्धिमत्ता प्रशिक्षण: भावनात्मक बुद्धिमत्ता पर ध्यान केंद्रित करने वाले व्यावसायिक विकास कार्यक्रम शिक्षकों के विकास और प्रभावशीलता में महत्वपूर्ण योगदान दे सकते हैं। भावनात्मक बुद्धिमत्ता कौशल में चल रहे प्रशिक्षण और समर्थन से शिक्षकों की अपनी भावनाओं को पहचानने और विनियमित करने, चुनौतीपूर्ण परिस्थितियों को प्रभावी ढंग से संभालने और छात्रों, सहकर्मियों और माता-पिता के साथ सकारात्मक बातचीत को बढ़ावा देने की क्षमता बढ़ सकती है (जोन्स और ओ'कॉनर, 2021)। इन प्रशिक्षण कार्यक्रमों में दैनिक शिक्षण प्रथाओं में भावनात्मक बुद्धिमत्ता के एकीकरण को सुविधाजनक बनाने के लिए कार्यशालाओं, कोचिंग, चिंतनशील प्रथाओं और सहकर्मी सहयोग सहित विभिन्न दृष्टिकोण शामिल हो सकते हैं।

सामग्री एवं कार्यप्रणाली

1. **अनुसंधान डिजाइन:** अनुसंधान डिजाइन में अध्ययन के संचालन के लिए समग्र दृष्टिकोण और रूपरेखा शामिल है। इस मामले में, एक साहित्य समीक्षा अनुसंधान पद्धति को नियोजित किया जाएगा। इसमें भावनात्मक बुद्धिमत्ता, शिक्षण प्रभावशीलता और कक्षा प्रबंधन से संबंधित मौजूदा विद्वान साहित्य का विश्लेषण और संश्लेषण शामिल है।

2. साहित्य खोज: प्रासंगिक स्रोतों की पहचान करने के लिए एक व्यापक साहित्य खोज आयोजित की जाएगी। PubMed, ERIC, PsycINFO और Google Scholar जैसे शैक्षणिक डेटाबेस का उपयोग किया जाएगा। भावनात्मक बुद्धिमत्ता, शिक्षण प्रभावशीलता और कक्षा प्रबंधन से संबंधित कीवर्ड का उपयोग प्रासंगिक लेखों, पुस्तकों और रिपोर्टों को पुनः प्राप्त करने के लिए किया जाएगा।

3. समावेशन और बहिष्करण मानदंड: उच्च गुणवत्ता और प्रासंगिक साहित्य के चयन को सुनिश्चित करने के लिए समावेशन मानदंड स्थापित किए जाएंगे। पिछले दस वर्षों में प्रकाशित सहकर्मी-समीक्षित लेखों, पुस्तकों और रिपोर्टों पर विचार किया जाएगा। प्राथमिक ध्यान उन अध्ययनों पर दिया जाएगा जो शिक्षण और कक्षा प्रबंधन के संदर्भ में भावनात्मक बुद्धिमत्ता को सीधे संबोधित करते हैं। गैर-अंग्रेजी भाषा के स्रोत और लेख जो पहुंच योग्य नहीं हैं, उन्हें बाहर रखा जाएगा।

4. डेटा निष्कर्षण: डेटा निष्कर्षण में चयनित स्रोतों से प्रासंगिक जानकारी की पहचान करना और उसे रिकॉर्ड करना शामिल है। निम्नलिखित डेटा निकाला जाएगा: a. लेखकों के नाम और प्रकाशन वर्ष बी. अनुसंधान के उद्देश्य और तरीके सी. भावनात्मक बुद्धिमत्ता और शिक्षण प्रभावशीलता से संबंधित मुख्य निष्कर्ष डी। शिक्षकों में भावनात्मक बुद्धिमत्ता विकसित करने की रणनीतियाँ

5. संश्लेषण और चर्चा: संश्लेषित डेटा को मुख्य विषयों और निष्कर्षों पर प्रकाश डालते हुए एक कथात्मक रूप में प्रस्तुत किया जाएगा। शिक्षकों में भावनात्मक बुद्धिमत्ता विकसित करने के लिए व्यावहारिक सिफारिशों के साथ-साथ प्रभावी शिक्षण और कक्षा प्रबंधन के लिए भावनात्मक बुद्धिमत्ता के निहितार्थ पर चर्चा की जाएगी।

अध्ययन की सीमाएं

1. भावनात्मक बुद्धिमत्ता का दायरा: अध्ययन केवल भावनात्मक बुद्धिमत्ता की सीमित समझ और शिक्षण और कक्षा प्रबंधन में इसके अनुप्रयोग पर केंद्रित हो सकता है। भावनात्मक बुद्धिमत्ता विभिन्न सैद्धांतिक मॉडलों और घटकों के साथ एक जटिल संरचना है। जांच को भावनात्मक बुद्धिमत्ता के विशिष्ट पहलुओं तक सीमित करने से अन्य प्रासंगिक आयामों और बारीकियों की अनदेखी हो सकती है।

2. सामान्यीकरण: संभावित नमूनाकरण पूर्वाग्रहों या विशिष्ट प्रासंगिक कारकों के कारण अध्ययन के निष्कर्षों में सीमित सामान्यीकरण हो सकता है। शोध किसी विशेष क्षेत्र, शैक्षिक स्तर या शिक्षण संदर्भ पर केंद्रित हो सकता है, जो शिक्षण वातावरण और आबादी की विविध श्रृंखला का पर्याप्त रूप से प्रतिनिधित्व नहीं कर सकता है।

3. भावनात्मक बुद्धिमत्ता का मापन: अध्ययन भावनात्मक बुद्धिमत्ता को मापने के लिए स्व-रिपोर्ट उपायों या व्यक्तिपरक आकलन पर निर्भर हो सकता है, जो सामाजिक वांछनीयता पूर्वाग्रहों या गलत आत्म-धारणा

से प्रभावित हो सकता है। वस्तुनिष्ठ उपाय, जैसे प्रदर्शन-आधारित मूल्यांकन या बहु-स्रोत मूल्यांकन, शिक्षण पेशे में भावनात्मक बुद्धिमत्ता की अधिक व्यापक समझ प्रदान कर सकते हैं।

4. रिश्तों की दिशा: जबकि अध्ययन का उद्देश्य भावनात्मक बुद्धिमत्ता और प्रभावी शिक्षण प्रथाओं के बीच संबंधों की जांच करना है, यह कार्य-कारण या रिश्ते की दिशा स्थापित करने में चुनौतियों का सामना कर सकता है। यह संभव है कि प्रभावी शिक्षण प्रथाएँ भावनात्मक बुद्धिमत्ता के विकास में योगदान करती हैं, न कि भावनात्मक बुद्धिमत्ता सीधे प्रभावी शिक्षण की ओर ले जाती है।

5. बाहरी कारकों का प्रभाव: अध्ययन शिक्षण और कक्षा प्रबंधन पर बाहरी कारकों के संभावित प्रभाव को ध्यान में नहीं रख सकता है। अन्य चर, जैसे शिक्षक अनुभव, कक्षा का आकार, पाठ्यक्रम की बाधाएं, या स्कूल संस्कृति, शिक्षण प्रथाओं और छात्र व्यवहार की प्रभावशीलता को भी प्रभावित कर सकते हैं। भावनात्मक बुद्धिमत्ता की भूमिका की व्यापक समझ प्रदान करने के लिए इन कारकों पर विचार किया जाना चाहिए।

6. कक्षा प्रबंधन और छात्र व्यवहार में विषयपरकता: कक्षा प्रबंधन रणनीतियों और छात्र व्यवहार पर भावनात्मक बुद्धिमत्ता के प्रभाव का आकलन करने में व्यक्तिपरक निर्णय और अवलोकन शामिल होते हैं। विभिन्न शोधकर्ता या पर्यवेक्षक शिक्षक-छात्र बातचीत या छात्र व्यवहार की अलग-अलग व्याख्या कर सकते हैं, जिससे निष्कर्षों में संभावित पूर्वाग्रह या विसंगतियां हो सकती हैं।

निष्कर्ष

प्रभावी शिक्षण और कक्षा प्रबंधन में भावनात्मक बुद्धिमत्ता (ईआई) की भूमिका निर्विवाद रूप से सर्वोपरि है। इस अध्ययन ने रेखांकित किया है कि शिक्षकों की स्वयं और अपने छात्रों दोनों में भावनाओं को समझने, समझने और विनियमित करने की क्षमता, सीखने के माहौल और शैक्षणिक परिणामों को गहराई से प्रभावित करती है। उच्च ईआई वाले शिक्षक एक सहायक और समावेशी कक्षा वातावरण बना सकते हैं जहां छात्र मूल्यवान, सम्मानित और सीखने के लिए प्रेरित महसूस करते हैं। इसके अलावा, भावनाओं का कुशल प्रबंधन शिक्षकों को सहानुभूति और संयम के साथ संघर्ष या व्यवधान जैसी चुनौतीपूर्ण स्थितियों से निपटने, रचनात्मक संकल्पों को बढ़ावा देने और अनुकूल सीखने के माहौल को बनाए रखने में सक्षम बनाता है। इसके अतिरिक्त, ईआई शिक्षकों और छात्रों के बीच प्रभावी संचार, सहयोग और संबंध निर्माण की सुविधा प्रदान करता है, शैक्षणिक सफलता के लिए आवश्यक विश्वास और तालमेल को बढ़ावा देता है। जैसे-जैसे शिक्षा जटिलता और विविधता में विकसित हो रही है, शिक्षकों के बीच भावनात्मक बुद्धिमत्ता का विकास समग्र विकास को बढ़ावा देने और सभी शिक्षार्थियों के लिए सकारात्मक शैक्षिक अनुभवों को बढ़ावा देने में एक महत्वपूर्ण घटक के रूप में उभर रहा है। इस प्रकार, शिक्षकों के लिए ईआई विकास कार्यक्रमों में निवेश

करना शिक्षण प्रभावशीलता को आगे बढ़ाने, छात्र जुड़ाव को बढ़ावा देने और अंततः, आज की गतिशील कक्षाओं में शैक्षिक परिणामों को बढ़ाने के लिए अनिवार्य हैं।

संदर्भ

1. ब्रैकेट, एम.ए., रिवर, एस.ई., और सलोवी, पी. (2011) भावनात्मक बुद्धिमत्ता: व्यक्तिगत, सामाजिक, शैक्षणिक और कार्यस्थल की सफलता के लिए निहितार्थ। सामाजिक एवं व्यक्तित्व मनोविज्ञान कम्पास, 5(1), 88-103।
2. एलियास, एम.जे., जिन्स, जे.ई., वीसबर्ग, आर.पी., फ्रे, के.एस., ग्रीनबर्ग, एम.टी., हेन्स, एन.एम., ... और श्राइवर, टी.पी. (2018) सामाजिक और भावनात्मक शिक्षा को बढ़ावा देना: शिक्षकों के लिए दिशानिर्देश। एएससीडी।
3. मेयर, जे.डी., सलोवी, पी., और कारुसो, डी.आर. (2004) भावनात्मक बुद्धिमत्ता: सिद्धांत, निष्कर्ष और निहितार्थ। मनोवैज्ञानिक जांच, 15(3), 197-215।
4. बार-ऑन, आर. (2000) भावनात्मक और सामाजिक बुद्धिमत्ता: भावनात्मक भागफल सूची से अंतर्दृष्टि। आर. बार-ऑन और जे.डी.ए. पार्कर (सं.) में, भावनात्मक बुद्धिमत्ता की पुस्तिका: घर, स्कूल और कार्यस्थल पर सिद्धांत, विकास, मूल्यांकन और अनुप्रयोग (पीपी. 363-388) जोसी-बास।
5. कूपर, आर.के., और सवाफ, ए. (1997) कार्यकारी ईक्यू: नेतृत्व और संगठनों में भावनात्मक बुद्धिमत्ता। पेंगुइन।
6. पेट्राइड्स, के.वी., और फ़र्नहैम, ए. (2000) भावनात्मक बुद्धिमत्ता की आयामी संरचना पर. व्यक्तित्व और व्यक्तिगत अंतर, 29(2), 313-320।
7. ब्रैकेट, एम. ए., और कटुलक, एन. ए. (2006) कक्षा में भावनात्मक बुद्धिमत्ता: शिक्षकों और छात्रों के लिए कौशल-आधारित प्रशिक्षण। जे. सियारोची, जे.पी. फोर्गस, और जे.डी. मेयर (सं.) में, रोजमर्रा की जिंदगी में भावनात्मक बुद्धिमत्ता: एक वैज्ञानिक जांच (पीपी. 272-295) मनोविज्ञान प्रेस.
8. शुट्टे, एन.एस., मैलॉफ, जे.एम., हॉल, एल.ई., हैगर्टी, डी.जे., कूपर, जे.टी., गोल्डन, सी.जे., और डोर्नहेम, एल. (1998) भावनात्मक बुद्धिमत्ता के माप का विकास और सत्यापन। व्यक्तित्व और व्यक्तिगत अंतर, 25(2), 167-177.
9. ब्रैकेट, एम. ए., और गेहर, जी. (सं.). (2006) भावनात्मक बुद्धिमत्ता को मापना: सामान्य आधार और विवाद। स्प्रिंगर साइंस एंड बिजनेस मीडिया।
10. मेयर, जे.डी., कारुसो, डी.आर., और सलोवी, पी. (2016) भावनात्मक बुद्धिमत्ता का क्षमता मॉडल: सिद्धांत और अद्यतन। भावना समीक्षा, 8(4), 290-300।

11. ब्रैकेट, एम.ए., पालोमेरा, आर., मोजसा-काजा, जे., रेयेस, एम.आर., और सलोवी, पी. (2010)। ब्रिटिश माध्यमिक विद्यालय के शिक्षकों के बीच भावना विनियमन क्षमता, जलन और नौकरी से संतुष्टि। स्कूलों में मनोविज्ञान, 47(4), 406-417।
12. सटन, आर.ई., और व्हीटली, के.एफ. (2003)। शिक्षकों की भावनाएँ और शिक्षण: साहित्य की समीक्षा और भविष्य के शोध के लिए दिशा-निर्देश। शैक्षिक मनोविज्ञान समीक्षा, 15(4), 327-358।
13. मुखोपाध्याय, एस., और साहा, ए. (2015) भारतीय शिक्षकों की भावनात्मक बुद्धिमत्ता और कक्षा प्रबंधन प्रथाएँ। इंटरनेशनल जर्नल ऑफ इंडियन साइकोलॉजी, 2(2), 1-14।
14. बिस्वास, एस., और राव, के.वी. (2018) भावनात्मक बुद्धिमत्ता और प्रभावी शिक्षण: भारत में माध्यमिक विद्यालय के शिक्षकों पर एक अध्ययन। इंटरनेशनल जर्नल ऑफ इंडियन साइकोलॉजी, 6(3), 57-66।
15. जिंदल-स्नेप, डी., मिलर, डी.जे., और सूद, के. (2015) भावनात्मक बुद्धिमत्ता और शिक्षक प्रभावशीलता: भारत में शिक्षकों के कार्यकाल का मध्यम प्रभाव। शिक्षण और शिक्षक शिक्षा, 50, 77-85.
16. कौर, ए., और सिंह, एम. (2017) भावनात्मक बुद्धिमत्ता और नौकरी प्राथमिक विद्यालय के शिक्षकों में संतुष्टि। जर्नल ऑफ इंडियन एजुकेशन, 43(4), 24-36।
17. कुमारी, एन., और लाल, एम. (2019) भावनात्मक बुद्धिमत्ता और शिक्षक प्रभावशीलता: भारत में माध्यमिक विद्यालय के शिक्षकों का एक अध्ययन। इंटरनेशनल जर्नल ऑफ रिसर्च इन एजुकेशन एंड साइंस, 5(3), 842-853।
18. मोहनराज, आर., और शनमुगसुंदरम, के. (2015) माध्यमिक विद्यालय के शिक्षकों की भावनात्मक बुद्धिमत्ता और शिक्षण प्रभावशीलता। इंडियन जर्नल ऑफ पॉजिटिव साइकोलॉजी, 6(3), 335-338।
19. सिंह, ए., और चटर्जी, डी. (2017) भारत में प्राथमिक विद्यालय के शिक्षकों के बीच भावनात्मक बुद्धिमत्ता और कक्षा प्रबंधन। इंटरनेशनल जर्नल ऑफ इंडियन साइकोलॉजी, 4(3), 46-59।
20. कुमार, आर. आर., और भूषण, बी. (2018) भावनात्मक बुद्धिमत्ता और शिक्षण प्रभावशीलता: पंजाब, भारत में माध्यमिक विद्यालय के शिक्षकों का एक अध्ययन। जर्नल ऑफ एजुकेशन एंड प्रैक्टिस, 9(15), 28-36।
21. कंसल, आर., और चौधरी, एस. (2016) उच्चतर माध्यमिक विद्यालय के शिक्षकों के बीच भावनात्मक बुद्धिमत्ता और शिक्षण योग्यता। इंटरनेशनल जर्नल ऑफ रिसर्च इन सोशल साइंसेज, 6(3), 292-304।
22. गोयल, आर., और शर्मा, एम. (2019) भावनात्मक बुद्धिमत्ता और कक्षा प्रबंधन: प्राथमिक विद्यालय के शिक्षकों का एक अध्ययन। इंडियन जर्नल ऑफ पॉजिटिव साइकोलॉजी.

23. सिंह, आर., और सिंह, जी. (2018) कार्य संतुष्टि के संबंध में माध्यमिक विद्यालय के शिक्षकों की भावनात्मक बुद्धिमत्ता और आत्म-प्रभावकारिता। जर्नल ऑफ एजुकेशनल रिसर्च एंड प्रैक्टिस, 7(3), 169-174।
24. चौहान, आर., और माहेश्वरी, एन. (2017) भावनात्मक बुद्धिमत्ता और शिक्षकों की शिक्षण प्रभावशीलता पर इसका प्रभाव। जर्नल ऑफ साइकोसोशल रिसर्च.
25. पाल, एस., और भट्टाचार्य, ए. (2016) पश्चिम बंगाल, भारत में माध्यमिक विद्यालय के शिक्षकों के बीच भावनात्मक बुद्धिमत्ता और नौकरी से संतुष्टि। जर्नल ऑफ साइकोसोशल रिसर्च